14	द्राष्ट्रः पुनकृतम् ॥ दरद ॥	
15	ध्रवा तु सर्वसंज्ञार्थ यस्यामाद्रयं निधीयते । नाम विकास	0
16	या अभिमह्य निक्न्येत स स्यात्पश्रुरूपाकृतः ॥ ८२६ ॥	1
17	पर्पराकं शसनं प्रोक्षणं च मखे बधः।	
18	व्हिंसार्थं कर्माभिचारः	
19	स्यायज्ञार्हे तु यज्ञियम् ॥ ८३० ॥	41
20	क्विः संानाय्य-	20
21	मामिना शृतान्ननीर्गं द्धि।	31
22	चीर्शरः पयस्या च	
23	तद्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ८३१ ॥	
24	क्वयं सुरेभ्या दातव्यं	61
25	पितृभ्यः कव्यमाद्नम्।	0.1
26	म्राज्ये तु द्धिसंयुक्ते पृषद्ाज्यं पृषातकः ॥ ६३२ ॥	
27	द्धा तु मधु संयुक्तं मधुपर्कं मक्राद्यः।	53
28	क्वित्री तु क्षेमकुएडं नहीं है जिसम्ब	21

14. Oberschale. — 15. Schale, in welche die für das Sarvasamig'n a-Opfer (?) bestimmte Butter gegossen wird. — 16. Ein unter den vorgeschriebenen Gebeten geschlachtetes Opfer. — 17. Schlachten eines Opferthiers (3 W.). — 18. Die dabei zu beobachtenden Ceremonien. — 19. Zum Opfer passend. — 20. Dié zum Brandopfer bestimmte Substanz (2 W.). — 21. 22. Geronnene Milch, mit gekochter warmer Milch gemischt (3 W.). — 23. Der Schaum darauf. — 24. Die den Göttern darzubringende Speise. — 25. Die den Manen darzubringende Speise. — 26. Mit geronnener Milch gemischte Butter (2 W.). — 27. Mit geronnener Milch gemischter Honig (2 W.). — 28. Höhlung im Boden zu einem Brandopfer.